हिंदी और मराठी साहित्य में दलित नारी विमर्श

'हिंदी और मराठी साहित्य में दलित नारी विमर्श'
Hindi Aur Marathi Sahitya Me Dalit Nari Vimarsh
(ISBN No.: 978-93-5067-416-1)

संपादक मंडल :

प्रधानाचार्य : डॉ. यशवंत पाटणे

संयोजक : प्रा. सुवर्णा कांबळे, अध्यक्षा हिंदी विभाग
: डॉ. दिलीप गायकवाड, मराठी विभाग

सहसंयोजक : प्रा. डॉ. भरत जाधव, मराठी विभाग
: प्रा. डॉ. मनिषा जाधव, हिंदी विभाग

(c) सर्व अधिकार प्राचार्य, कला व वाणिज्य महाविद्यालय, सातारा यांच्या स्वाधीन

प्रथम आवृत्ती : दि.१० ऑगस्ट २०१५

प्रकाशक : सौ. शीतल जयंत लंगडे
अक्षरा पब्लिकेशन्स
कुमार रेसिडेंसी, ८७, शुक्रवार पेठ, सातारा.
मो. ९९२११२८३५२
प्रकाशन क्रमांक ५५

मुखपृष्ठ व लेआऊट : सृजन आर्टस्, सातारा. मोबा: ८४८४८५५२६३
व्हॉटस ॲप ९७६२३६८२५२ E-mail avadhutchintan@gmail.com

सहयोग मूल्य : रुपये ३००/- फक्त

(या ग्रंथातील शोधनिबंधाशी संपादक मंडळ सहमत असेलच असे नाही.)

१९	मिथिलेश्वर की कहानियां में...	प्रा. डॉ. संजय चिंदगे	७७
२०	हिंदी नाटक में चित्रीत दलित नारी...	प्रा. डॉ. सुचिता गायकवाड	८०
२१	गांटी की तलाश कहानी में....	प्रा. संध्या कदम	८५
२२	हिंदी दलित कहानियों में नारी चित्रण	प्रा. डॉ. मिनाक्षी कुरणे	८९
२३	माझी मी आत्मकथनामधील...	प्रा. डॉ. एन. व्ही. शिंदे	९३
२४	दलित आत्मकथनातील स्त्री जाणिवा	प्रा. सुहास निर्मळ	९५
२५	मराठी दलित कवयित्रींचे दलित स्त्री मुक्ती विचार	प्रा. अनंत कस्तुरे	१००
२६	विमुक्त भटक्यांच्या आत्म कथनातील स्त्री चित्रण	प्रा. डॉ. अशोक शिंदे	१०४
२७	पुरूषी आकलनाच्या कक्षेतील स्त्री संवेदना	प्रा. डॉ. बाळासाहेब लबडे	११४
२८	माझ्या जल्माची चित्तरकथा...	प्रा. संतोष सणस	१२२
२९	दलित लेखिकांच्या आत्म कथनांतील...	प्रा. डॉ. कांचन नलावडे	१२६
३०	मराठी दलित स्त्रियांची आत्मकथने	प्रा. डॉ. तानाजी पाटील	१३०
३१	हिंदी भाषा का दलित साहित्य	प्रा. एम. एस. मुजावर	१३२
३२	हिंदी साहित्य के महिला उपन्यासकारों...	प्रा. शीतल जाधव	१३९
३३	दलित साहित्य में नारी स्वर	डॉ. शुभदा मोघे	१४३
३४	ढोलन कुंजकली उपन्यास में...	डॉ. गजानन चव्हाण	१४६
३५	नव्वदोत्तरी दलित भारतीय...	प्रा. डॉ. प्रभाकर पवार	१४९
३६	डॉ. सुशीला टाकभौरे की सिलिया..	प्रा. सुनंदा मोहिते	१५५
३७	आत्मचरित्रातून चित्रीत होणारी दलित नारी	प्रा. डॉ. नितीश सावंत	१५८

रोटी की तलाश कहानी में नारी विमर्श

प्रा. मंध्या कदम.बापूजी कॉलेज, सदाशिवगड.कर्नाटक

स्वराज प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित कहानी संग्रह जीवन एक चुनौती से इस कहानी को चयनित किया गया है। कहानिकार डॉ. सुरेश सुळे जी कर्नाटक के एकमात्र हिन्दी दलित कहानिकार माने जाते है। इनकी कहानियों में यथार्थता एवं सजीवता दृष्टीगत होता है। पाठक कहानी पढने शुरू करता है, तो, उसे पूर्ण करके ही रुक जाता है। ऐसा प्रवाहबल इनकी कहानियों में देखने को मिलता है। कहानियों में एकता, मित्रता, भेदविहिन, सुविचार अनेक समस्याएँ नारी परक विचार कमजोर एव पिछडों को समस्याएं नारी परक विचार कम जोर पिछडो को सुधारमार्ग आदी गुणों को लेकर मार्गदर्शन मिलता है। मुझे नारी पात्रो के प्रति ध्यान देकर, उनके जीवन सुधार एक संघर्षमय जीवन को लेकर सजग करनेवाले विषयों के प्रस्तुत करना ही मेरा मुख्य ध्येय है। प्रथमत: कहानी का संक्षिप्त सारांश देखेंगे फिर समस्याएँ एवं सुधार पर प्रकाश डालनेका प्रयत्न करेंगे।

संक्षिप्त सारांश :-

कहानी की नायिका पारवती, विधवा है, गरीब है जवान है, सुंदर है और पिछडे वर्ग की नारी है। इन कमियों के साथ इसमें एक परेशानी यह है कि इसे छोटे - छोटे सात बच्चे है। अकेली मजदूरी करनेवाली इसलिए अकसर बच्चे भूख से रोते रहते है। इनकी भूख शांत करने के लिए सदा चिंता मे डूबी रहती है। बच्चे जागने से पहले से पहले ही कुछ खाने की व्यवस्था करने के विचार से बडी बेटी सीमा बारह साल की है। उसे वृक्षों के निचे गिरे हुए औदुंबर चुनकर लाने के लिए भेजती है। भोर ही लडकी गाँव के पिश्चम भाग में धोबियों के खेत से औदुंबर चुनने निकली। हर रोज से भी आज देर हो गई है। इसे चिंता लगी थी कही कोई जानवर या अन्य लोग उन्हे चुन न लेजाए या खाकर या खुंदलकर बब न करें सोचकर तेजी से भागकर, वृक्ष के निचे पहुंच गई। वृक्ष के नीचे बहुत से औदुम्बर

दिखाई दिए। यह खुश हुई। एक फल लेकर मुह मे डाला ही था की आवाज आयी कौन है री पेड के निचे (प्र.स.८१) मोमा डर के मारे भाग रही थी। फकीचंद आकर दबोच लिया और कमर मे लात मारकर गालियां देने लगा। लडकी मुह के बल गिरी खाली हाथ ही घर लौट आई।

घर गई बच्चे भूख से रो रहे थे। उसी पांव वह गांव के साहुकार के दरवाजे पर पहुंच गयी। मिन्नतें करने पर बलराम मानकरी जवार देकर मदत करते है। कई दिन तक अनाज मिला, परंतु पारू दोपहर का खाना नही खाती थी। ज्वार बचाकर बहुत दिन तक चलाना चाहती थी।

एक सेठ के खेत में वही बगास का काम करने गई है। उसकी नजर इसे देख खराब हुई। वह इसे रखेल के रूप मे रखने का प्रस्ताव पारू के सम्मुख रखता है। वह कहती है – सेठजी चार पैसे बचाकर मेरे बेटे की पढाई पर खर्च करना है। आप गरीबी का मजाक उडा रहे है। हम मेहनत करना जाते हैं। गुलामी से नही इज्जत से बच्चो का भविष्य बनाने की मेरी तम्मना है। तब सेठ इसे मूर्ख कहकर क्रोधित होता है। पारू जबाब मे कहती है। सेठजी हम गरीब है लेकीन कभी ईमान नही बेचा है। तुमने कहा हम ढेढ के पास दिमाग नही होता। तुम लोगों ने भारत की कानून बनाया है या हमारे बाबासाहब ने? हम अब करना छोड दिया है सिर्फ करना सिखा है। जब काम करते है तभी पेट भरता है फिर किससे किस लिए डरे। पारवती बाबासाहब का अपमान करनेवाले सेठके काम को ठोकराकर घर की ओर निकल चली।

कामुक सेठ शरणम्मा नामक नारी पर अपने डोरे डालने लगा। उसे मजदूरों को पानी पिलाने का जिम्मा देते हुए कुएं से पानी लाने का कहा। वह जैसे ही कमरे के अंदार घडा लाने के लिए गई। तब सेठ जट से दबोच लिया। वह चिल्लाने लगी दूर थे इसकी आवाज सुनकर भाग आए। पारवती भी आ गई। शरणम्मा को विवस्त्र देखकर भी कोई उसकी मदद के लिए सामने नही आए। क्योंकि सेठ का डर था। शेरनी की तरह पारवती कमरे में प्रवेश कर के और शरणम्मा के शरीर पर कपडा ओड दिया। फिर कहने लगी अरे पापी तेरी कोई माँ, बहन, नही है? उनके साथ भी ऐसा ही दुष्कर्म करता है? रात में क्या पत्नी को छोड बेटी के पास जाकर सोता है? यह तो तेरे बेटी की उम्र की है। कैसा नराधम हुआ इसके साथ ऐसा व्यवहार कर तुझे तो सजा मिलने ही चाहिए। आगे कहती है। हम तेरे पास सोने

आते, काम करने आते है, समझा? मजबुरी का फायदा उठाता है? सब गरीब औरतों को शरीर बेचनेवालो समजा है? अरे, हम तो इज्जत से जीते है। और स्वाभिमान से जीना सिखाया है हमारे बाबा ने और यह भी कह गए है की तुम अन्य दलितों को न सताए। फिर तहसिल भालकी के पुलिस थाने में केस दाखिल हुआ। सेठ को सात साल की सजा हुई। इसतरह कहानी समाप्त होती है।

इस कहानी में जो समस्याएँ है उसे दखने का प्रयास करेंगे :-

संपूर्ण कहानी ही समस्या प्रधान है। इसमें पारवती पात्र के माध्यमम से कहानीकार सामाजिक और आर्थिक आदि अनेक समस्याओं को उठाने का प्रयत्न किया है। इस कहानी में पारू चाहने पर भी नही पढ सकती। एक तो गरीबी कारण है, दुसरी बात आर्थिक समस्या होने के कारण सारे बच्चो की फीस भी नही भर सकती। फिर भी मेहनत - मजदूरी करके ही अपने दो बेटो को पढा रही है। पारव-ती शिक्षा के महतव को अच्छी तरह जानती है। शैक्षिक ममस्या भी इस कहानी में देखने को मिलती है। बच्चे पढना चाहते है पर भी उन्हे स्कुल नही भेजा जाता। इसके पिछे दो बाते सामाने आती है एक तो लडकियों को पढाना बेकार समझने वाली पारवती। लउका - लडकी का भेद कर रही है। यह उसकी गती नही है। पुरुष प्रधान समाज का दबाव है। शिक्षा से ज्ञान मिलता है, यह जानते हुए भी चु रहने वाली पारू को समस्याएँ मजबू कर देती है आदी।

इस कहानी में सामाजिक स्याएँ अपना भयानक रूप दर्शाते है अमीर - गरीब, उच-नीच, मजदूर - साहुकार की अनेक समस्याओं को देख सकते है।

उदा. के लिए पारू पर सेठ के डोरे डालना। गरीबों को वासना का हवस बनाना। काम करने पर भी समय पर पैसे नही देना आदी अनेक सामाजिक समस्याओं को इस कहानी में बताया गया है।

इस कहानी में दलित नारी की जाग्रती स्वाभिमान मेहनती भाव, परोकारी, भावनाओं को खुब दर्शाय गया है। अर्थात शिक्षित, दलित नारी के साथ - साथ गाँव और बेहा-ती दलित नारी भी स्वाभिमान और बाबासाहेब के विचारो पर चलका अपनी जिंदगी सुधारना चाहती है यहाँ पर हमें दलित नारी के सुधारणा-वादी विचार थी दृष्टिगत होती है। इस तरह यह कह मकते है की यह कहानी संपूर्ण रूप से नारी उत्थान को लेकर लिखी गयी है।